A Comparative Study for Moral Values of Parents on High School Students

(अषासकीय हाई स्कूल स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक दृष्टिकोण पर अभिभावकों के प्रभाव का एक तुलनात्मक अध्ययन)

* **Kamini Gadekar**
Ph.D. Scholar
SSSUTMS,Sehore

* * **Dr Deeraj Shinde**
Professor,
SSSUTMS, Sehore

1. प्रस्तावना

जीवन में नैतिक मूल्यों का विषेष महत्व है। ईमानदारी एवं लगनषीलता के परिणाम स्वरुप जीवन और कार्य विनम्रता के पक्षधार होते है। इन उद्देष्यों पर पारिवारिक एवं सामाजिक प्रभाव एवं वातावरण से जीवन मूल्य निर्धारित होते है। जीवन मूल्यों से नैतिक कार्य एवं आयाम बनते हैं। अति निम्न, निम्न एवं उच्च तथा अति उच्च वातावरण वाले सामाजिक मूल्य देष एवं परिवार के लिए षिक्षादायक होते है। बालक की षिक्षा में परिवार का महत्वपूर्ण स्थान है। वस्तुतः बालक वैसा ही बनता है जैसा उसका पारिवारिक वातावरण होता है। पारिवारिक वातावरण दो शब्दों परिवार व वातावरण से बनता है। अतः इन दोनों का अर्थ जानना आवष्यक है। परिवार के महत्व के संबंध में रूसों का कहना है कि आधुनिक सभ्यता में परिवार ही बालकों को सर्वोत्तम षिक्षा दे सकता है। राबर्ट डी. हेन्स और उसके सहयोगियों के अनुसार माता की भूमिका अपने बच्चों के लिये एक षिक्षक के रूप में होती है। परम्परागत रूप में माता–पिता ही पूर्णरूप से बालक के जीवन के प्रारंभिव वर्षों में उसके विकास के प्रति उत्तरदायी होते है। परिवार एक छोटा सा सामाजिक समुदाय है। जो सामान्यतः माता–पिता बच्चों से मिलकर बनता है। जिसमें प्रेम और उत्तरदायित्व का न्यायोंचित विभाजन होता है, और जिसमें बच्चों का आत्मनियन्त्रित एवं सामाजिक प्रेरणा प्राप्त व्यक्ति बनने की षिक्षा प्रदान की जाती है। प्रत्येक

माता–पिता अपने बालक–बालिकाओं से कुछ आषा रखते है। प्रत्येक माता–पिता यही चाहते है कि उनकी संताने बड़ी होकर उनका नाम रोषन करें । अधिकांषतः यह देखा जाता है कि माता–पिता अपने बालक–बालिकाओं की इच्छा के बगैर अपनी इच्छायें उन पर थोपते है। वास्तव में इस इस उम्र में बालकों में कुछ करने की प्रबल इच्छा होती है परंतु यदि उनकी इस इच्छा पर अपनी कोई इच्छा लादी या थेपी जाती है तो वे विचलित हो जाते है, जिसके प्रभाव निष्चित ही उनके व्यवहार पर पड़ता है, इसलिये इस समय अभिभावकों को अपने बालक–बालिकाओं की ओर सकारात्मक ध्यान देने की आवष्यकता होती है। बालक सर्वप्रथम षिक्षा अपने परिवार से ग्रहण करता है और अभिभावकों के द्वारा की गयी गतिविधियों का अनुसरण करता है लेकिन इस तथ्य में कभी–कभी अपवाद मिल जाता है जैसे अभिभावक जो गतिविधियां करते है वे चाहते है उनके बच्चे इन्ही गतिविधियों का आत्मबोध करें परन्तु बालक उनके विपरीत कुछ गतिविधियां करना चाहता है।

2. षोध समस्या षीर्षक

प्रस्तुत षोध अध्ययन हेतु, षोधकर्ता द्वारा जिस षोध समस्या का निर्माण किया गया है, उसका षीर्षक निम्न है –

अषासकीय हाई स्कूल स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक दृष्टिकोण पर अभिभावकों के प्रभाव का एक तुलनात्मक अध्ययन

3. अध्ययन की आवष्यकता

हाई–स्कूल स्तर के विद्यार्थियों का मन अति संवेदनषील है। उनके संवेगों में परिवर्तन बहुत तीव्र गति से होते है, ऐसे में संवेगों पर नियंत्रण रखने में विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर परिवार एवं अभिभावक ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है। बालक का आत्म – सम्प्रत्यय निरंतर सामाजिक प्रक्रिया के परिणा स्वरूप जीवन भर विकसित होता रहता है। बालक आत्म प्रत्यय लेकर पैदा नहीं होता है, क्योंकि वह वंषानुगत नहीं होता है। छात्र के आत्म प्रत्यय निर्माण तथा उसे विकसित करने में परिवार एवं अभिभावकों की अहम् भूमिका होती है। हाई स्कूल के विद्यार्थियों की मनः स्थिति का अध्ययन करके अभिभावक उन्हें असमायोजित होने से बचा सकते है।

उनकी समस्याओं का अध्ययन करके अभिभावकों उन्हें सही मार्ग दिखा सकते है। इससे समाज तो लाभान्वित होगा ही साथ उनके आत्म प्रत्यय का विकास होने पर उसके व्यक्तित्व का भी सर्वांगीण विकास होगा। हमारा देश अत्याधिक प्राचीन संस्कृति वाला देश है, जिसमें हमेशा ही मनुष्य के जीवन में नैतिकता व चरित्र को प्रधानता दी गयी है, और सादा जीवन उच्च विचार भारतीय संस्कृति का मूलमंत्र रहे हैं, किंतु भौतिक जीवन को भी पर्याप्त महत्व दिया गया और गुरूकुलों में नैतिक, अध्यात्मिक शिक्षा के साथ ही भौतिक जीवन से जुड़े क्रियाकलापों व व्यवहारिक ज्ञान की शिक्षा भी प्रदान की जाती थी। षिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में सद्गुणों का विकास करके मानव समाज अपने मूल्यों को सुरक्षित रख सकता है और आगे बढ सकता है। तभी तो विद्वान कहते हैं कि मनुष्य अच्छे गुणों का जितना अधिक संगठन करता है उतना ही अधिक वह अपने चरित्र की अभिव्यक्ति करता है। आज के विद्यार्थी ही राष्ट्र एवं समाज के भावी कर्णधार व देश का भविष्य है, अतः यदि हमारे विद्यार्थी अपने जीवन में उच्च नैतिक व मानवीय मूल्यों को आत्मसात् करेंगें तो भविष्य में आदर्श व नैतिक मानवीय समाज की कल्पना साकार हो सकेगीं।

4. अध्ययन के उद्देष्य

यह शोधकार्य निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रखकर किया जा रहा है –

1. बैतूल जिले के अषासकीय हाई–स्कूल स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों के प्रति अभिभावकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
2. बैतूल जिले के अषासकीय हाई–स्कूल स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के प्रति अभिभावकों के दृष्टिकोण अध्ययन करना।

5. षोध परिकल्पना

परिकल्पना का षाब्दिक अर्थ है – पूर्व चिन्तन। यह अनुसंधान की प्रक्रिया का दूसरा महत्वर्पूा स्तम्भ है। इसका तात्पर्य यह है कि किसी समस्या के विष्लेषण और परिभाषीकरण के प्ष्चात उसमें कारणों तथा कार्य कारण के सम्बन्ध में

पूर्व चिन्तन कर लिया गया है। अर्थात इस समस्या का यह कारण हो सकता है। प्रस्तुत षोध में निम्न षून्य परिकल्पनाओं को समेषित किया गया है –

1. बैतूल जिले के अषासकीय हाई–स्कूल स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं के नैतिक दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

6. शोध समस्या की परिसीमायें

प्रस्तुत षोधकार्य मध्य प्रदेष राज्य के बैतूल जिले से सम्बन्धित होगा।

7. सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन :

किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान होता है, जिस पर सम्पूर्ण भावी कार्य अधारित होता है । यदि सम्बन्धित सहित्य के सर्वेक्षण के द्वारा इस नींव को दृढ़ नही कर लेते हैं तो हमारे कार्य का प्रभाव कम होने की सम्भावना रहती है। इसके अन्तर्गत समस्या से संबंधित पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पूर्व में प्रकाशित शोध प्रबन्धों एवं अभिलेखों का अध्ययन किया गया। इससे शोधकर्ता को समस्या की परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूप रेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। **देवराज, 2017** ने नैतिक मूल्यों का आधार एवं प्रकृति के सम्बन्ध में अध्ययन किया। इन्होने अपने अध्ययन में पाया कि मनुष्य की स्थिति दूसरे जीवों से केवल इस बात से भिन्न है कि वह उक्त मूल्यों का अन्वेषण और उत्पादन सचेत भाव और सर्जनमूलक प्रयत्न से करता है। खराब सामाजिक व्यवस्था में रहते हुये अधिकांष लोग अपनी आवष्यकताओं को पूरा करना कठिन पाते है, इस प्रकार स्व केन्दित अथवा स्वार्थी बन जाते है। स्वार्थ परायण व्यक्ति वे होते है, जिनमें बड़ी महत्वकांक्षा रहती है और साधन सम्पन्नता ऐसे व्यक्ति को असामाजिक व्यक्ति बना देती है। **षैली, ओकोन्नोर, 2018** के द्वारा पालकों की सामाजिक आर्थिक स्थिति, और बालक के षैक्षिक स्तर, व्यवसायिक स्तर, तथा षैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध का अध्ययन किया गया। अध्ययन में यह निष्कर्ष प्राप्त किया गया कि पिता के सामाजिक आर्थिक स्तर तथा षैक्षिक स्तर का, बालक की षैक्षिक उपलब्धि में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान होता है। **आर दुबे, 2019,** द्वारा उच्चतर माध्यमिक

विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोरवय विद्यार्थियों पर अभिभावक प्रोत्साहन के प्रभाव का अध्ययन पर षोध कार्य किया गया। अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोरवय छात्र व छात्राओं पर अभिभावकों के प्रोत्साहन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

8. शोध विधि

शोधकर्ता द्वारा चयनित समस्या वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत आती है जिसमें शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। शैक्षिक शोधों के अन्तर्गत वर्णनात्मक अनुसंधान का प्रयोग बहुतायत से किया जाता है। इस प्रकार के शोधों का मुख्य उद्देश्य उपलब्ध परिस्थितियों या दशाओं की प्रकृति का पता लगाना तथा विशेष प्रकार की घटनाओं के मध्य पाये जाने वाले सम्बन्धों का निर्धारण करना है।

9. जनसंख्याः तथा न्यादर्श

इकाइयों के समूचे समूह को जिसके लिए चर का मान निकालना अभीष्ट है जनसंख्या कहते हैं। शोधकर्ता द्वारा अपने शोध अध्ययन की समस्या के अनुरूप बैतूल जिले के षहरी क्षेत्र में संचालित अषासकीय हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं को शोध समष्टि के रूप में चुना है तथा न्यादर्ष के रूप में बैतूल जिले के षहरी क्षेत्र में संचालित 4 अषासकीय हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों की कक्षा नवमी में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं का चयन किया गया है।

10. सांख्यिकीय विधि

संकलित प्रदत्तों के तार्किक विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में मध्यमान मानक विचलन क्रान्तिक अनुपात परीक्षण एवं प्रतिषत के द्वारा प्रदत्तों की गणना की गयी है।

11. प्रदत्तों की गणना एवं परिणाम

सारणी संख्या – 1
बैतूल जिले के अषासकीय हाई–स्कूल स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों के नैतिक दृष्टिकोण का सांख्यिकीय विष्लेषण

क्रं.	विवरण	छ	ड	ैण्क्ण	ैम्ड	ि दृ टंजपव टंसनम	च ढ .05 पर सार्थकता
1.	सर्वोदय हाई स्कूल सदर	80	14.3375	2.3054	0.2578	65.95803	सार्थक
2.	संजीवनी हाई स्कूल सदर	80	12.8875	2.9767	0.3328		
3.	सरस्वती विद्या मंदिर कालापाठा	80	15.9625	2.2073	0.2468		
4.	बालाजी पब्लिक स्कूल खंजनपुर	80	9.95	3.5468	0.3965		

सारणी संख्या – 2
बैतूल जिले के अषासकीय हाई–स्कूल स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के नैतिक दृष्टिकोण का सांख्यिकीय विष्लेषण

क्रं.	विवरण	छ	ड	ैण्क्ण	ैम्ड	ि दृ टंजपव टंसनम	च ढ .05 पर सार्थकता
1.	सर्वोदय हाई स्कूल सदर	80	13.2875	2.4193	0.2705	64.78129	सार्थक
2.	संजीवनी हाई स्कूल सदर	80	12.0125	3.3995	0.3801		
3.	सरस्वती विद्या मंदिर कालापाठा	80	16.8875	1.8675	0.2088		
4.	बालाजी पब्लिक स्कूल खंजनपुर	80	10.7125	3.7423	0.4184		

सारणी संख्या – 1 के विष्लेषण से प्राप्त होता है कि बैतूल जिले के अषासकीय हाई–स्कूल स्तर के विद्यालयों में सरस्वती विद्या मंदिर कालापाठा बैतूल में अध्ययनरत छात्रों में नैतिक दृष्टिकोण सबसे बेहतर

तथा बालाजी पब्लिक स्कूल खंजनपुर में अध्ययनरत छात्रों में सबसे कम पाया गया तथा **सारणी संख्या – 2 के विश्लेषण** से प्राप्त होता है कि बैतूल जिले के अषासकीय हाई–स्कूल स्तर के विद्यालयों मे से सरस्वती विद्या मंदिर कालापाठा बैतूल में अध्ययनरत छात्राओं में नैतिक दृष्टिकोण सबसे बेहतर पाया गया तथा बालाजी पब्लिक स्कूल खंजनपुर में अध्ययनरत छात्राओं में सबसे कम पाया गया।

12. परिकल्पनाओं का परीक्षण

सारणी संख्या–1 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि बैतूल जिले के अषासकीय हाई–स्कूल स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों के नैतिक दृष्टिकोण के अन्तर्गत सर्वोदय हाई स्कूल सदर बैतूल में अध्ययनरत छात्रों के नैतिक दृष्टिकोण के प्राप्तांकों का मध्यमान 14. 3375, मानक विचलन 2.3054 तथा माध्य मानक त्रुटि 0.2578 है, जबकि संजीवनी हाई स्कूल सदर बैतूल में अध्ययनरत छात्रों के नैतिक दृष्टिकोण के प्राप्तांकों का मध्यमान 12.8875 मानक विचलन 2.9767 तथा माध्य मानक त्रुटि 0.3328 है, सरस्वती विद्या मंदिर कालापाठा बैतूल में अध्ययनरत छात्रों के नैतिक दृष्टिकोण के प्राप्तांकों का मध्यमान 15.9625, मानक विचलन 2.2073 तथा माध्य मानक त्रुटि 0. 2468 है, तथा बालाजी पब्लिक स्कूल खंजनपुर में अध्ययनरत छात्रों के नैतिक दृष्टिकोण के प्राप्तांकों का मध्यमान 9.95, मानक विचलन 3. 5468 तथा माध्य मानक त्रुटि 0.3965 है। इनका एफ–अनुपात मूल्य 65. 95803 जो कि च ढ .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। उक्त सारणी के विष्लेषण से प्राप्त होता है कि बैतूल जिले के अषासकीय हाई–स्कूल स्तर के विद्यालयों में सरस्वती विद्या मंदिर कालापाठा बैतूल में अध्ययनरत छात्रों में नैतिक दृष्टिकोण सबसे बेहतर पाया गया तथा बालाजी पब्लिक स्कूल खंजनपुर में अध्ययनरत छात्रों में सबसे कम पाया गया जबकि सारणी संख्या–2 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि बैतूल जिले के अषासकीय हाई–स्कूल स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत

छात्राओं के नैतिक दृष्टिकोण के अन्तर्गत सर्वोदय हाई स्कूल सदर बैतूल के प्राप्तांकों का मध्यमान 13.2875, मानक विचलन 2.4193 तथा माध्य मानक त्रुटि 0.2705 है, जबकि संजीवनी हाई स्कूल सदर बैतूल में अध्ययनरत छात्राओं के नैतिक दृष्टिकोण के प्राप्तांकों का मध्यमान 12.0125, मानक विचलन 3.3995 तथा माध्य मानक त्रुटि 0. 3801 है, सरस्वती विद्या मंदिर कालापाठा बैतूल में अध्ययनरत छात्राओं के नैतिक दृष्टिकोण के प्राप्तांकों का मध्यमान 16.8875, मानक विचलन 1.8675 तथा माध्य मानक त्रुटि 0.2088 है, तथा बालाजी पब्लिक स्कूल खंजनपुर में अध्ययनरत छात्राओं के नैतिक दृष्टिकोण के प्राप्तांकों का मध्यमान 10.7125, मानक विचलन 3.7423 तथा माध्य मानक त्रुटि 0.4184 है। इनका एफ–अनुपात मूल्य 64.78129 जो कि च ढ .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। उक्त सारणी के विष्लेषण से प्राप्त होता है कि बैतूल जिले के अषासकीय हाई–स्कूल स्तर के विद्यालयों मे से सरस्वती विद्या मंदिर कालापाठा बैतूल में अध्ययनरत छात्राओं में नैतिक दृष्टिकोण सबसे बेहतर पाया गया तथा बालाजी पब्लिक स्कूल खंजनपुर में अध्ययनरत छात्राओं में सबसे कम पाया गया।

इस प्रकार पाया जाता है कि बैतूल जिले के अषासकीय हाई–स्कूल स्तर के विद्यालयों में अध्ययन छात्र एवं छात्राओं के नैतिक दृष्टिकोण सरस्वती विद्या मंदिर कालापाठा बैतूल में सबसे बेहतर तथा बालाजी पब्लिक स्कूल खंजनपुर में सबसे कम पाये गये, जो कि च ढ .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, अतएव परिकल्पना – बैतूल जिले के अषासकीय हाई–स्कूल स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं के नैतिक दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, को अस्वीकृत किया जाता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. **वेस्ट, जॉन, डब्ल्यू,** "रिसर्च इन एजूकेशन", न्यू देहली: प्रिटिंग हाल ऑफ इण्डिया प्रा0लि0, 1977.
2. **ठपरपसण डण .** ष्टंतमदजंस च्तंबजपबमे ंदक पजे मिमिबजे वद ।बंकमउपब `जतमेे ंदक डमदजंस भ्मंसजीण् प्दकपंद च्लबीवसवहपबंस त्मेमंतबीए 2005 टवसण 50 ;2द्ध
3. **चौहान, एस. एस,** "एडवांस एजूकेशनल साइकोलॉजी", नई दिल्ली, विकास पब्लिसिंग हाउस, 2004.
4. **कार्लिंगर, एफ,** "फाउण्डेशन आफ विहैवियरल रिसर्च", न्यूयार्क, हाल्ट राइनहर्ट एण्ड विन्सटन, 1966.
5. **कपिल, एच. के,** "सांख्यिकी के मूल तत्त्व", विनोद पुस्तक मंदिर,, आगरा, 1994
6. **पाण्डेय, राजेश एवं मुखर्जी पापिया (2008),** सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता का अध्ययन, रिसर्च लिंक – 57, वाल्यूम .टप्प ;10द्ध दिसंबर 2008, 84–87।
7. **रूहेला, सत्यपाल,** "अनुसंधान सर्वेक्षण और सांख्यिकी", विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा0लि0, लन्दनः, 2004.
8. **सिंह, अरूण कुमार,** "उच्चतर मनोविज्ञान", मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन बंगला रोड, इलाहाबाद, 2000.
9. टीपीजींए ज्ञण्ब . ष्टंतमदजंस म्दबवनतंहमउमदज ` ं क्मजमतउपदंदज वि मसि. ब्वदबमचज ंदक "बीवसेंजपब ।बीपमअमउमदज पद अपेनंससल बींससमदहमक बीपसकतमदष् प्दकपंद श्रवनतदंस वि च्लबीवसवहल ंदक म्कनबंजपवद 2004ण
10. ंतपदंए ।ीजंत – "ेंतउंए ′।पं . ष्जीम मिमिबज वि चिममत ंदक च्तमदज च्तमेनतम वद ।बंकमउपब ।बीपमअमउमदज वि न्दपअमतेपजलए चीण्क्ए ।हतं न्दपअमतेपजल 2011ण